सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 177

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 37
अगस्त – 2019

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों

जीवन उत्पत्ति के अनुसार 5 कर्मेंद्रियाँ, 5 ज्ञानेंद्रियाँ, 5 प्राणकोष व बुद्धि इन 16 माध्यमों द्वारा आप देह धारण करते है। आपकी इस देह को कर्म के अनुसार कार्य करना होता है। कर्म यानी जन्मकर्म। जन्मप्राप्ति 3 प्रकार से होती है। कर्मपरत्वे, कार्यपरत्वे, कारणपरत्वे। कर्म के अनुसार जीवन जीते समय आप कहते है, "हमारे जीवन में कमी है" लेकिन यह कमी कहाँ होती है? कमी आपकी बुद्धि में होती है। आपकी बुद्धि में कमी होने के कारण आपके मन का विकास नहीं होता और मन का विकास ना होने के कारण आपको चित्त का लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। चित्त का लाभ प्राप्त होना यह अवस्था निर्माण करना महत्त्वपूर्ण है।

आज तक आपने पढ़ा है कि **बुद्धि, मन, चित्त, अहंकार** ये चार अवस्थाऐं शरीर में होती हैं। अगर आप दिगंबर अवस्था में आइने के सामने खड़े होते हैं तब क्या ये चार अवस्थाऐं जिनकी शरीर में आवश्यकता है, आपको दिखाई देती है? बुद्धि, मन, चित्त, अहंकार ये चार अवस्थाऐं बाह्य रूप से दिखाई नहीं देती लेकिन आपके हर रोज के आचार-विचारों में ये चार अवस्थाऐं प्रकट होती रहती है। इन चार अवस्थाओं का स्थान और अस्तित्व देह में कहाँ होता है? देखिए, इस निरांजन में घी है लेकिन पहले वह घी कहाँ था? दूध में था। दूध में से घी कब प्राप्त हुआ? दूध पर प्रक्रिया करने के बाद मतलब दूध पर प्रक्रिया करने के बाद जब दूध को पूर्णत्व प्राप्त होता है तब उसमें से घी मिलता है यानी दूध के अंतिम तत्व का उदय होता है। वैसे ही जिसे आप अहंकार कहते है वह अहंकार नहीं 'अहं-आकार' है और वह कहाँ होता है? अहं–आकार आपकी बुद्धि में ही होता है। बुद्धि का पूर्ण विकास होने के बाद मन अवस्था का आरंभ होता है। आपके जीवन परिसर में जो विषय आते हैं वे प्रथमतः बुद्धि में धारण होते हैं, बुद्धि में विषय की धारणा होने के बाद जब आपको उस विषय का पूर्णरूप में ज्ञान होता है तब आपको उस विषय के संबंध में समाधान का एहसास होता है। यही मन की धारणा है। **मन का पूर्णत्व होने के बाद चित्त की धारणा होती है। चित्त का पूर्णत्व होने के बाद अहं-आकार की धारणा होती है। अहं-आकार का अर्थ क्या**

है? बुद्धि में जो विषय धारण होता है वह संपूर्ण शरीर में धारण होना यानी बुद्धि और अंतिम अवस्था का एकरूप होना। उदाहरण देखिए – आपकी बुद्धि में 'देव' यह विषय है। अब देव की परिभाषा क्या है? जो देते है लेकिन वाणी से उसका उच्चार नहीं करते और आप कैसे है? आप केवल दस पैसे देते है और दस जगह पर उसके बारे में कहते है। यानी आपकी बुद्धि में जो विषय है वह आपके संपूर्ण शरीर में धारण नहीं हुआ है इसलिए आप देवता नहीं है।

आपको सिनेमा देखने के लिए या पार्टी में जाना है तो आप मयूर की गति से जाते है यानी जल्दी-जल्दी जाते है और आरती के लिए जाना है तो आप कछुए की गति से यानी धीरे-धीरे जाते है। आपके जीवन में ये दो विषय आते है – सिनेमा और पार्टी या आरती यानी ऐहिक और पारमार्थिक तब उन विषयों में योग्य–अयोग्य का ज्ञान देने वाला माध्यम बुद्धि है। बुद्धि जब सही निर्णय लेने के लिए काबिल नहीं होती तब आप सिनेमा के लिए जल्दी-जल्दी जाते है और आरती के लिए धीरे-धीरे जाते है।

देहिक अवस्था में बुद्धि, मन, चित्त, अहं–आकार ये चार अवस्थाऐं अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। क्या अहं-आकार यह अवस्था आपमें होती है? हाँ! बुद्धि की अंतिम अवस्था अहं–आकार है। नित्य जीवन में जो दिखाई देता है वह आपका अहंकार है। जब आपका किसी से झगड़ा होता है तो आप कहते है, "देखो, ध्यान में रखो, मुझसे मुकाबला है। मेरे जैसा बुरा आदमी कोई नहीं है।" मतलब उस आदमी से दुश्मनी का जो विषय है वह क्रोध के रूप में उसके सिर से पाँव तक प्रकट होता है। आज आप भक्तों को बुद्धि, मन, चित्त, अहं-आकार ये सारी अवस्थाऐं प्राप्त करना देहाधीन है और देह धर्म के अनुसार देह धारण करने से वे आपको प्राप्त होती है परन्तु आप उनका योग्य रीति से उपयोग नहीं करते। इन अवस्थाओं का उपयोग कैसे करना है यह सोचना महत्त्वपूर्ण है। आप बदले की भावना से दूसरे व्यक्ति से कहते है, "मेरे जैसा बुरा आदमी तुम्हें दुनिया में नहीं मिलेगा", यह कहना गलत है। इसके बजाए यदि आप कहोगे कि मेरे जैसा प्यार करने वाला तुम्हें दुनिया में नहीं मिलेगा तो यह कहना सही है। "मेरे जैसा बुरा कोई नहीं", यह कहने वाले मनुष्य का जन्म व्यर्थ है। अब दूसरे कहने पर गौर कीजिए– "मेरे जैसा प्यार करने वाला तुम्हें दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा" यह कहने के लिए अत्यन्त कष्ट है। "जगत में सब प्रेम करते हैं ऐसा तुम्हें लगता है तो सबके प्रेम का स्वीकार करके बाद में मेरे पास आओ तब सबसे अधिक मेरा प्रेम है यह अनुभव प्राप्त करोगे क्योंकि मैं तो मैं ही हूँ।" इस कहने में पूर्णतः विकसित अवस्था की अनुभूति है। यह कहने वाले व्यक्ति के माध्यम में अब इसके आगे विकास होने के लिए कुछ भी बाकी नहीं है यानी उसका पूर्णतः विकास हुआ है और जिनके देहमाध्यम की यह अवस्था होती है उन्हें ही सद्गुरु या गुरु कहते हैं। कुछ व्यक्ति खुद को गुरु कहलाते हैं लेकिन बहुत गुस्सेल होते हैं। वे खुद जैसे ही क्रोध करने वाले शिष्य निर्माण करते हैं। ऐसे व्यक्ति गुरु नहीं हो सकते। **सदैव क्रोध से बर्ताव करना यह बुद्धि की कमी का लक्षण है। केवल ऐहिक ज्ञान प्राप्त करने से बुद्धि की कमी बढ़ती है। बुद्धि की कमी दूर करनी चाहिए जिससे मन, चित्त, अहं-आकार ये अवस्थाऐं प्राप्त होती हैं।** इसके लिए बाल्य अवस्था से ही उचित संस्कार करना आवश्यक है।

आपकी देह को कार्य के अनुसार तीन अवस्थाऐं होती है – बाल्य, युवा और वृद्ध अवस्था। बाल्य अवस्था में बाल्य, शिशु, कुमार ये तीन अवस्थाऐं होती है जिनकी क्रमशः उम्र है 0–3 साल, 3–5 साल और 5–8 साल। इन तीनों अवस्थाओं में बालक की बुद्धि माता-पिता और गुरु के पास होती है। आपके घर में जो छोटे बच्चे है वे जीवन की प्रारंभिक अवस्था में है। बाल्य, शिशु, कुमार इन तीन अवस्थाओं से आगे जाकर वे सज्ञान होने वाले है। आपके इन बच्चों की बुद्धि उनके पास ना होकर आपके पास होती है। मानव का पहला गुरु माता है। जन्म लेने के बाद दूध कैसे पीना है यह प्रथमतः माता सीखाती है। मतलब बालक को अन्नमय कोष का अस्तित्व और ज्ञान उसकी माता से प्राप्त होता है।

बाल्य, शिशु, कुमार इन तीन अवस्थाओं के बालकों में बुद्धि धारण हुई होती है और वह बुद्धि बालक के माता–पिता के पास होती है और इसलिए इस अवस्था के बालकों के जीवन का विकास माता–पिता पर निर्भर होता है। जीवन विकास के संबंध में हम सत्व, रज, तम इन तीन गुणों का विचार करते हैं। हर मनुष्य में ये तीनों गुण होते हैं लेकिन बाल्य, शिशु, कुमार इन अवस्थाओं के बालकों में 100% सत्वगुण होता है रज, तम गुण नहीं होते। बालक पर संस्कार करने वाले माता–पिता बालक में रज, तम गुण धारण करने का कारण होते हैं। जैसे बालक ने कुछ माँगा तो वे झटसे

कहते हैं, ''मुँह तोड दूँगा, बार-बार क्या माँग रहे हो?'' माता-पिता के इस क्रोध युक्त व्यवहार और उच्चार से यदि बालक को क्रोध शब्द का ज्ञान नहीं हुआ तो भी माता-पिता का आचरण प्यार युक्त नहीं है यह समझने की बुद्धि बालक के पास निश्चित होती है। माता-पिता का यह क्रोध युक्त भाव बालक में भी धारण होता है। बाल्य, शिशु, कुमार अवस्था के बालकों पर संस्कार करना आपका कर्त्तव्य है। घर में हो रहे आपके आचरण द्वारा जो विषय बालक पर आघात करते हैं वे विषय उसकी देह में धारण होते हैं लेकिन आप इसका आस्था से विचार नहीं करते है। आप बालक पर उचित संस्कार नहीं करते और फिर बेटा बड़ा होने के बाद पूछते है कि यह आई.ए.एस. क्यों नहीं हुआ? अब बेटे ने आई.ए.एस. होने के लिए उस पर जो संस्कार आपने करने आवश्यक थे वे आपने नहीं किए फिर अब हमें सवाल करने से क्या उपयोग होगा?

बचपन में बुद्धि का विकास शीघ्र गति से होता है जिसके कारण बच्चे विषय जल्दी धारण कर लेते है और भूलते नहीं है। बाल्य, शिशु, कुमार अवस्था में बालक की बुद्धि आपसे बहुत गुणा गतिमान होती है। बालक पर संस्कार करते समय आपको इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है। बच्चे बड़े होते समय बच्चों का देहिक विकास होता है और उनका पालन–पोषण करते समय आपका आत्मिक विकास होता है। बच्चों के पालन-पोषण के संस्कारों के संबंध में यदि आपके विषय गलत है तो वे बच्चों के और आपके विकास के आड़े आते हैं मतलब दो पीढ़ियों का नुकसान होता है। बाल्य, शिशु, कुमार अवस्था का माध्यम बुद्धि है और यह बुद्धि माता–पिता और अध्यापक इनके सहकार्य से कैसे विकसित होगी यह देखना माता–पिता तथा अध्यापक इन सबका कर्त्तव्य हैं। बाल्य, शिशु, कुमार अवस्था के बालक की बुद्धि खोखली होती है और इन अवस्थाओं में उसकी बुद्धि में ज्ञान धारण होने की क्रिया का आरंभ होता है ज्ञान की धारणा होते-होते बालक आगे पी.एच.डी. तक जाता है लेकिन आरंभ 'श्री' से होता है। इसलिए बच्चों में बुद्धि साकार होने से पहले उन्हें अपने माता-पिता और अध्यापक आधारस्तम्भ जैसे लगना आवश्यक है। इस अवस्था में वे निराधार है ऐसा उन्हें नहीं लगना चाहिए।

बुद्धि का जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण संबंध है। बाल्य, शिशु, कुमार अवस्था के आगे जो अवस्थाऐं देह में साकार होती हैं उनमें पहली अवस्था यानी 'जीवन' है और उस जीवन का पहला पायदान बुद्धि है। इसी के कारण बुद्धि में जो विषय सर्वप्रथम धारण होते हैं वे जीवन के अंत तक नहीं निकलते। आज आप लोग बच्चों को पश्चिमी संस्कृति सीखाना आवश्यक समझते है लेकिन मिशनरी स्कूलों में भी पढ़ाई से पहले प्रार्थना करना सीखाते हैं। आपने अपने बच्चों को बचपन में देवधर्म, साधना, प्रार्थना सीखाना आवश्यक है। यह कर्त्तव्य समझकर आपको करना जरूरी है। सुबह उठने के बाद बच्चों को केवल दूध का गिलास या चाय का कप देने से माँ का कर्त्तव्य पूरा हुआ ऐसा नहीं है। उस समय माँ ने आस्थापूर्वक बच्चों को ईश्वर को प्रणाम करना सीखाना चाहिए। माँ ने उस समय बच्चों को यह कहना आवश्यक है कि सुबह उठकर पहले ईश्वर को प्रणाम करो, 5 मिनट उनके पास बैठो और उसके बाद बाकी काम करो लेकिन आजकल के पढ़े-लिखे माता-पिता ही कहते हैं कि इस उम्र में यानी बचपन में देवधर्म की क्या आवश्यकता है आगे बुढ़ापे में तो देवधर्म करना ही है। इन्ही विचारों के कारण बच्चों को आगे का जीवन सुख, शांति, समाधान से व्यतीत करने का ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

कुमार अवस्था में ही उपासना का आरंभ करना क्यों आवश्यक है? इसका जवाब इस प्रकार है– कुमार अवस्था तक बालकों में सत्व, रज, तम इन तीन गुणों में से सत्वगुण 100% होता है और उसके जीवन में परिपूर्ण रूप से पाँच ऋणानुबंधों की धारणा नहीं हुई होती। मनुष्य की देहिक अवस्था 18 से 20 साल की उम्र में परिपूर्ण होती है तब मनुष्य के 5 ऋणानुबंध उसके जीवन में परिपूर्णता से धारण होते है और उसको संपूर्ण जीवन की प्राप्ति होती है। इसलिए उसके पहले गुरुवलय उसके देहिक वलय के अंदर धारण होना आवश्यक है और यह गुरुवलय देहिक वलय के अंदर धारण करने का कार्य बचपन में सुलभता से होता है। बचपन में बालक का गुरुवलय उसके देहिक, आत्मिक और कर्मवलयों के बाहर होता है लेकिन उस समय बालक में 100% सत्वगुण होते है तथा उसके जीवन में परिपूर्ण रूप से ऋणानुबंधों की धारणा नहीं हुई होती इसलिए उसका गुरुवलय देहिक वलय के अंदर धारण कराने में कोई रुकावट या अड़चन नहीं आती। 8 साल की उम्र तक आप आसानी से बच्चे का गुरुवलय उसके देहिक वलय के अंदर धारण करा सकते है। इस

लाभ के कारण बालक आगे उसकी युवा अवस्था में सुख, शांति, समाधान से नौकरी–धंधा कर सकता है। इस तरह प्राप्त हुई बुद्धि का विकास मन, चित्त, अंह–आकार इन अवस्थाओं तक करने के लिए बच्चों का गुरुवलय उनके देहिक वलय के अंदर धारण कराने का प्रबंध बच्चों की बाल्य अवस्था में ही करना अत्यंत आवश्यक है।

आज आपको अपना गुरुवलय देहिक वलय के अंदर धारण कराने में कितने कष्ट हो रहे हैं? यदि बच्चों को उनकी बाल्य अवस्था में ही गुरुवलय देहिक वलय के अंदर धारण होने का लाभ प्राप्त हुआ तो अब आपको जो कष्ट उठाने पड़ रहे है वे उन्हें नहीं उठाने पड़ेंगे। इस उम्र में उनमें रज, तम गुण और ऋणानुबंधों की धारणा नहीं हुई होती इसलिए उन्हें यह लाभ प्राप्त होना 100% मुमकिन है। बचपन में बालकों को भीमरूपी, रामरक्षा जैसे स्तोत्र सिखाए तो उससे उनके जीवन विकास का कार्य आसानी से होता है लेकिन आप क्या करते है? बच्चों को गोद में उठाकर सिनेमा देखने जाते है। आपकी आँखों को जो दिखाई देता है वही बालक की आँखों को भी दिखाई देता है। यदि बच्चे को उस चित्र का विषय समझ में नहीं आया तो भी चित्र की आकृति समझ आती है। अगर आपने इस उम्र में बच्चों को सिनेमा दिखाए तो आगे के जीवन में उनकी इस तरह के चित्र देखने की वासना बढ़ती जाएगी। क्या इसे योग्य पालन-पोशण कह सकते हैं? इस तरह माता-पिता अज्ञान के कारण बच्चों के मन के कॅमेरे पर यानी उनकी आँखों के सामने कौन-सा विषय रखते हैं और उनकी बाल बुद्धि में कौन-सी तस्वीर रखते हैं इसका विचार माता-पिता ने करना आवश्यक है।

गुरुवलय देहिक वलय के अंदर धारण कराना यह बालक के आगे के जीवन का प्रबंध करना है। यदि आपके जीवन में भी यह प्रबंध पहले ही हुआ होता तो आपको दी हुई उपासना दीक्षा, नामस्मरण दीक्षा और अनुग्रह दीक्षा आपके जीवन के दोषों के विमोचन के लिए खर्च नहीं होती, उनका आपके जीवन विकास के लिए उपयोग होता जिससे आज आपको गुरुकृपा से कम से कम दिव्य दृष्टि या दिव्य वाणी का लाभ निश्चित ही प्राप्त होता लेकिन आज आपको इनमें से कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ है। इसी विचार से मैंने आज आपको यह विषय समझाया है। आप अपने बच्चों को उनके हित के लिए जो संस्कार आवश्यक है वह बचपन में ही देते है तो उनमें 100% सत्वगुण होने के कारण उन्हें आसानी से और सुलभता से उसका 100% लाभ प्राप्त होगा। इतनी साधना करके भी आज तक आप यह लाभ हासिल नहीं कर सके लेकिन बच्चों को केवल 5 ॐकार करने से इस लाभ का अनुभव होगा क्योंकि उनमें दूसरे कोई विषय ही नहीं होते।

जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक आपमें सत्व, रज, तम ये तीनों गुण होते हैं। यदि कोई व्यक्ति वृद्धावस्था में 100% सत्वगुणी हुआ तो उसका क्या उपयोग है? वृद्धावस्था में मनुष्य सत्वगुणी होता है क्योंकि तब वह कुछ कर ही नहीं सकता मतलब परिस्थिति के कारण उसमें तब सत्वगुण आता है। आपको छुआरा मिला तो भी आप खा नहीं रहे है लेकिन आप सत्वगुणी नहीं है क्योंकि तब आपके मुँह में दाँत ही नहीं है। वृद्धावस्था का सत्वगुण वास्तव में इच्छा मुक्तता, लीनता या विनम्रता नहीं है। वृद्ध लोग कहते है,, "10 साल हो गए मैं सिनेमा देखने नहीं गया" लेकिन वे इसलिए नहीं जाते क्योंकि पैरों की तकलीफ के कारण 3 घंटे बैठ नहीं सकते। वृद्धावस्था में इतनी पराधीनता प्राप्त होने के बाद यदि कोई आस्था से जीवन का विचार करने वाला होगा तो वह उचित नहीं है। वृद्धावस्था के ऐसे अविकसित जीवन का विचार 'व्यर्थ जीवन' करके ही होता है।

आज प्रौढ़ उम्र में आपको मन के विकास के लिए कष्ट उठाने पड़ रहे है। धर्माचरण सीखना पड़ रहा है, गुरुवलय देहिक वलय के अंदर धारण करने के लिए आप प्रयत्न कर रहे है लेकिन यदि बालक की बाल्य अवस्था में ही गुरुवलय उसके देहिक वलय के अंदर धारण हुआ तो उसकी बुद्धि का विकास होकर उसे बुद्धि, मन, चित्त, अहं–आकार इन अवस्थाओं का लाभ होगा और उसे भविष्य में विषय का पूर्णत्व प्राप्त होगा। वह अपने विषय से एकरूप रहकर कामयाबी प्राप्त कर सकेगा।

।। शुभम् भवतु।।

सेवक।